गाँधी मार्ग की विश्व व्यापकता

सिद्धान्त एवं व्यवहार

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

गाँधी मार्ग की विश्व व्यापकता

सिद्धान्त एवं व्यवहार

मुख्य सम्पादक

प्रो0. वी0 के0 राय

निर्देशक

गाँधी विचार एवम् शान्ति अध्ययन संस्थान इलाहाबाद विश्वविद्यालय

सम्पादक

डॉ0. राजेश कुमार सिंह

डॉ0. अखिलेश पाल

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

दिल्ली (भारत)

नमूना SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल–9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110090 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com

गाँधी मार्ग की विश्व व्यापकता
सिद्धान्त एवं व्यवहार

संस्करण : 2018
© सम्पादक
ISBN: 978-93-81416-92-1

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

भूमिका

डॉ. जान हेन्स होप्स का कथन है–''ईसा मसीह के बाद गांधी जी संसार के सबसे महान शक्तिशाली व्यक्ति थे, इसलिए नहीं कि उन्होंने स्वाधीनता संग्राम का सफलतापूर्वक संचालन किया बल्कि इसलिए कि हिंसा, स्वार्थ, शक्ति की तृष्णा और नैतिक पतन के वर्तमान वातावरण में भी उन्होंने सत्य, अहिंसा और साधनों की शुद्धता का कठिन पाठ अपने व्यावहारिक जीवन द्वारा लोगों के गले उतार दिया।''

वर्तमाान विश्व मानव इतिहास के चुनौतीपूर्ण दौर से गुजर रहा है। उदारीकरण, निजीकरण और भूमण्डलीकरण न केवल लोगों एवं राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को नया रूप दे रहे हैं, बल्कि मौलिक रूप से दुनियां भर की संस्कृति, विचारधारा, सोच और जीवनशैली को भी नया रूप दे रहे हैं। हर जगह भौतिक विकास के पागलपन का दौर जारी है और इसने इंसानों को समाज और संस्कृति से दूर कर दिया है जिसके कारण विभिन्न प्रकार की हिंसा एवं अपराध की गतिविधियॉ सामने आ रही हैं। हर जगह हिंसा बढी है और सेवा तथा आवश्यकता की जगह लालच ने ले लिया है। इमानदारी और नैतिकता सार्वजनिक जीवन में अब महत्वपूर्ण नहीं रह गये हैं। संकटों के उपर संकट, भ्रष्टाचार के उपर भ्रष्टाचार बढ रहे हैं जिनका शिकार अन्ततः जनता ही हो रही है। लगातार बढती आर्थिक असमानता तथा हिंसा से मुक्ति के लिए आज दुनियॉ जिस रास्ते की तलाश कर रही है, गॉधी के विचारों में उसकी सबसे सटीक दिशा मौजूद है। गॉधी दर्शन के मूल में मौजूद सत्य, अहिंसा, सादगी, अपरिग्रह, श्रम और नैतिकता को अपना कर ही देश और दुनियॉ में सहयोग, सहअस्तित्व एवं समानता पर आधारित शोषणमुक्त समाज का निर्माण सम्भव है। गॉधीवाद सिद्धान्त आज की दुनियॉ की चुनौतियों एवं

दुविधा को हल करने में सक्षम है।

दुनिया में शांति, प्रेम, अहिंसा, सत्य, ईमानदारी, मौलिक शुद्धता और करुणा तथा इन उपकरणों के सफल प्रयोगकर्त्ता के रूप में याद किये जाते हैं, जिसके बल पर उन्होंने उपनिवेशवादी सरकार के खिलाफ पूरे देश को एकजुट कर आज़ादी की अलख जगाई। गांधी ने अपने जीवन के समस्त अनुभवों का प्रयोग भारत को आज़ाद कराने में किया। उनका कहना था कि भारत की हर चीज़ मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षाएँ रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिये जो कुछ चाहिये, वह सब उसे भारत में मिल सकता है। अतः यह कहने में अतिषयोक्ति नहीं कि गांधी के विचार, दर्शन तथा सिद्धांत कल भी प्रासंगिक थे, आज भी हैं तथा आने वाले समय में भी रहेंगे।

वर्तमान परिस्थितियाँ जहाँ ओर गम्भीर चुनौतियाँ प्रस्तुत करती हैं वहीं दूसरी ओर कुछ नयी सम्भावनाओं का परिदृश्य भी दिखाती हैं। अतएवं इसी सन्दर्भ को दृष्टिगत रखते हुए महात्मा गाँधी के 150वीं जयन्ती वर्ष पर उनके बताए हुए मार्ग पर चर्चा प्रासंगिक एवं समीचीन है। इसी महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक कुल 18 भागों में विभाजित है, जिसमें गाँध ी जी के सभी आदर्शों, सिद्धान्तों एवं पक्षों पर अध्ययन किया गया है। अध ययन का लाभ कहीं पढ़े–लिखे 'प्रवर वर्ग' तक ही सीमित न रह जाए इसलिए इसकी भाषा 'हिन्दी' रखी गई है। इस प्रकार यह पुस्तक नीति–निध ार्कों, समाज सुधारकों, प्रशासकों, शोधार्थियों समेत आम जन–गण के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा हम सब का पूर्ण विश्वास है।

डॉ0 राजेश कुमार सिंह
डॉ0 अखिलेश पाल

प्रस्तावना

यह वर्ष महात्मा गांधी की 150वीं जयंती का वर्ष है। महात्मा गांधी भारत की आत्मा की आवाज थे। वे हमारा अतीत है, वर्तमान और हमारा भविष्य भी हैं। महात्मा गांधी के विचार दर्शन और संदेश वर्तमान के लिए बहुत सार्थक हैं। हमें कहना चाहिए कि वे ही तो एक धनात्मक तत्व हैं जो कि आधुनिक सभ्यता के समक्ष चुनौतियोंका सार्थक हल प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त कर सकते है। स्थाई मान्यताएं जैसे स्व से पूर्व सेवा संचय से पूर्व त्याग और दूसरों के लिए चिंता बहुत ही तेजी से समाप्त होती जा रही है और उनका स्थान स्वार्थपरता लालच अवसरवाद धोखा चालाकी और झूठ के द्वारा लिया जा रहा है। इन सब ने द्वन्दों और संघर्षों को जन्म दिया है और सहिष्णुता तथा मानव प्रेम के उच्च आदर्श कमजोर पड़ते जा रहे हैं। इस भयावह तस्वीर को पूर्ण करने के लिए शस्त्रीकरण के लिए अनंत होड़ लगी हुई है। युद्ध के विनाशकारी शस्त्र मानव जाति के अस्तित्व के लिए ही खतरा बने हुए हैं। बड़े पैमाने पर विनाश की गई और नई तकनीकियों का विकास किया जा रहा है। कानून की सभी प्रणालियों करारों संधियों एवं गठबंधनों को मानवीय मेलजोल और शांति स्थापित करने में सफलता नहीं मिली है।

इस प्रकार के वातावरण में गांधीवाद ही एक आशा की किरण प्रस्तुत करता है। गांधी जी के मूल्य एवं सिद्धांत आदर्श और उपदेश मानवता को आंतरिक बाह्य अमर शांति की मंजिल तक पहुंचने के लिए दिशा प्रदान करते हैं। सत्य के साथ गांधी जी के प्रयोगों ने उनके इस विश्वास को पक्का कर दिया था कि सत्य की सदा विजय होती है और सही रास्ता सत्य का रास्ता

ही है। आज मानवता की मुक्ति सत्य का रास्ता अपनाने से ही है। गांधी जी सत्य को ईश्वर का पर्याय मानते थे। उनका ईश्वर में पूरा विश्वास था जिसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया कि ईश्वर एक अदृश्य शक्ति है जिसका अस्तित्व है ईश्वर में विश्वास और सत्य का अनुसरण मानवता को सर्वनाश से बचा सकते हैं।

ईश्वर और सत्य से घनिश्ठ रूप से सम्बद्ध गांधीजी का अहिंसा में विश्वास है। वास्तव में अहिंसा गांधी दर्शन का आधार स्तंभ है। अहिंसा का सत्य से बहुत गहरा संबंध है। हिंसा असत्य है क्योंकि यह जीवन की एकता की विनाशिनी है और हिंसा का रास्ता बड़े खतरों से भरा हुआ है। शांति दुनिया में तभी स्थापित की जा सकती है जब हम अहिंसा का अनुसरण करें। गांधीजी अहिंसक योद्धा थे। वे स्वयं दुख एवं बलिदान झेलकर विरोधी के विरुद्ध संघर्ष करते थे। उनका लक्ष्य विरोधी के हृदय परिवर्तन का होता था। उनके अहिंसक युद्ध में भय और कटुता के लिए कोई स्थान नहीं था बल्कि वह युद्धरत दलों में सद्भावना और मित्रता पैदा करता था। गांधीजी अंतरराष्ट्रीय संबंधों में ही नहीं अपितु व्यक्तिगत जीवन में भी अहिंसा का अनुसरण करने के पक्षधर थे। अहिंसा, अहिंसा तब ही है जबकि इसका पालन मन, वचन और कर्म से किया जाए। जिसने इस सिद्धांत का थोड़ा बहुत भी पालन अपने निजी जीवन में कर लिया है उसे पता लगेगा कि वह कितनी शक्ति का हथियार है बंदूक की बैरल से निकली गोली से अधिक शक्तिशाली। अहिंसा आध्यात्मिकता की पोशाक है बिल्कुल उसी प्रकार जैसे आध्यात्मिकता सच्चे धर्म की पोशक है। वर्तमान में भी व्यक्तिगत जीवन सार्वजनिक जीवन और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में इस शास्त्र की शक्ति से बड़ी बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं।

गांधीजी का धर्म एवं नैतिकता में गहरा विश्वास था। धर्म से अर्थ आडंबर एवं धार्मिक पाखंड आदि नहीं था। उनका धर्म नैतिकता का पर्यायवाची था। उन्होंने राजनीति में धर्म का प्रवेश किया एवं इस प्रकार राजनीति का आध्यात्मिक करण किया। गांधीजी उन लोगों से बिल्कुल सहमत नहीं थे जो यह कहते थे कि धर्म का राजनीति से कोई लेना देना नहीं है। धर्म विहीन राजनीति मृत्यु जाल है जो आत्मा का हनन करता है। वे उन

लोगों की स्थिति की भर्त्सना करते थे। जो साध्य को साधन का औचित्य ठहराता है। यदि साधन अनैतिक है तो उसकी प्रववत्ति सत्य को दूशित करने की है। साध्य और साधन में वही संबंध है जो कि बीज और पेड़ में है। जैसा साधन होगा वैसा ही साध्य होगा।

गांधी जी जीवन की सादगी का उपदेश देते थे। वे गौतम बुद्ध के साथ एक मत थे कि इच्छाओं को बढ़ाने से दुख पैदा होता है। हमारा वास्तविक कल्याण इच्छाओं की सीमितता में है। इच्छा की समाप्ति से दुख की समाप्ति होती है और इसलिए निर्वाण होता है। सच्ची संस्कृति और सभ्यता इच्छाओं को कम करने और सादा जीवन जीने में वास करती है। गांधी जी ने रोटी श्रम का विचार प्रतिपादित किया जो कि उनकी सादगी की धारणा पर आधारित है। इस विचार के अनुसार मनुश्य को अपनी रोटी शारीरिक श्रम के द्वारा कमानी चाहिए। यह सिद्धांत सर्वत्र प्रासंगिक है और सदैव के लिए सार्थक है। क्या ही अच्छा होता कि लोग इसका पालन करते तो बहुत सारे दुखों अस्वस्थता निराशा और जीवन के तनाव समाप्त हो जाते।

गांधीजी आर्थिक और राजनीतिक दोनों प्रकार के विकेंद्रीकरण के पक्षधर थे। अहिंसा में उनके विश्वास के कारण केंद्रीकरण में निहित हिंसा के विशय में उन्हें चेतना थी। गांधीजी आत्मनिर्भर और स्वायत्त पंचायतों की स्थापना के पक्षधर थे। गांव की समस्याओं का समाधान गांव वालों द्वारा ही होना चाहिए और इसके लिए संगठन वे स्वयं ही बनाएं। उनका विश्वास था कि सही वातावरण दिया जाए तो व्यक्ति में स्वयं पर षासन करने की सामर्थ्य है। आर्थिक क्षेत्र में भी गांधीजी केंद्रीकृत उद्योग के विरुद्ध थे। उन्होंने कुटीर उद्योग धंधों के सुधार एवं स्थापना पर काफी बल दिया। सामान्यतः गांधीजी भारी उद्योगों के खिलाफ थे अब जबकि भारी उद्योगों से निकलने वाली गैसों ने पर्यावरण की क्षति की समस्या को जन्म दिया है तब कुटीर उद्योग और लघु उद्योगों की ओर वापसी ही पर्यावरण प्रदूषण के हानिकारक प्रभाव से बचने के लिए मानवता के लिए एक आशा की किरण प्रदान करती है। इस संबंध में गांधी जी का दृष्टिकोण अब भी कितना सार्थक है।

गांधी जी की अद्वितीय देन है कि उन्होंने पूंजीवाद और समाजवाद का समन्वय किया। उनके ट्रस्टीशिप के सिद्धांत का यह लक्ष्य है। गांधीजी

अमीरों से धन छीनकर गरीबों में बांटने में विश्वास नहीं रखते थे। वे अमीरों के फालतू धन को अमीर द्वारा ही समाज के भले के लिए ट्रस्ट में रखना चाहते थे। गांधी जी का यह विचार आजकल बहुत सार्थक है क्योंकि मार्क्स के प्रकार के समाजवाद की स्थापना या पूंजीवाद को नश्ट करना संभव नहीं है। ट्रस्टीशिप के सिद्धांत द्वारा गांधी जी ने समाजवाद और पूंजीवाद के बीच का एक रास्ता निकाला।

गांधी जी के राष्ट्रवाद और अंतरराष्ट्रीयवाद पर विचार आज बहुत प्रबल और सार्थक है। आज की दुनिया में अंतर्राष्ट्रवाद की कीमत पर हम राष्ट्रवाद नहीं बन सकते। नाजियों और फासीवादियों का राष्ट्रवाद आज असंगत ही नहीं भयानक परिणामों से भरा है। आज उदार राष्ट्रवाद को अपनाने की आवश्यकता है। हमें राष्ट्रवादी इसलिए होना चाहिए कि जिससे कि अंतर्राष्ट्रवादी बन सके। गांधी जी भारत को स्वतंत्र इसलिए चाहते थे क्योंकि वह समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए संसाधनों का विकास कर सकें। गांधी जी का विश्वास था कि मानवता की मुक्ति का रास्ता अध्यात्म से होकर गुजरता है और भौतिकवाद एक हानिकारक कारक है जो ना केवल अनेक तनावों को जन्म देता है अपितु आत्मा का हनन भी करता है। धन संग्रह की ओर पागलों की तरह भाग दौड़ और जीवन के प्रति उपभोक्तावादी दृ ष्टिकोण ने हमारे जीवन की षांति पर कुठाराघात किया है। भौतिकवाद और आध्यात्मवाद इन दोनों के मध्य सुखद एवं विवेकपूर्ण संतुलन निकलना ही एकमात्र हल है। आधुनिक युग में ही हमारी बहुत सी बुराइयों के लिए प्रभावी समाधान है।

गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचार भी आज बहुत प्रासंगिक हैं। यह सही है कि कई विचारों का संपूर्ण रूप से क्रियान्वयन नहीं किया जा सकता किंतु शिक्षा के संबंध में बनने वाली नीतियों और कार्यक्रमों में उन विचारों की आत्मा को लागू किया जा सकता है। 'अध्ययनशील रहते हुए जीविका कमाओ' जो कि उनकी बुनियादी शिक्षा का केंद्रीय सिद्धांत है आज भी हमारी शिक्षा को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्यावसायिक कोर्स का लागू किया जाना गांधी जी के शिक्षा संबंधी विचारों का ही विस्तश्ण है और शिक्षा की योजना बहुत ही सार्थक और लाभकारी सिद्ध हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि गांधीवाद आज बहुत सार्थक है।

हमें यह तथ्य स्वीकार करना है कि गांधीवाद का प्रचार एवं अभ्यास कि हमारी सभ्यता को बुराइयों एवं ऋणात्मक प्रवशतियों से मुक्त कर सकता है जो कि मानव जाति को इस्पात की एड़ियों से कुचलने की संभावना रखते हैं।

प्रो० वी०के० राय
विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग,
निदेशक
गॉधी विचार एवं शान्ति अध्ययन संस्थान
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

लेखक मंडल

1. **डॉ. कन्हैया त्रिपाठी,** (पूर्व विशेष कार्य अधिकारी,राष्ट्रपति, भारत गणराज्य) असिस्टेंट प्रोफेसर/निदेशक यूजीसी–ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेण्ट सेण्टर, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र)।
2. **डॉ0 कमलेश पाल,** सहायक प्राध्यापक, मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल, विश्वविद्यालय जौनपुर।
3. **डॉ0 इन्दु बघेल,** सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।
4. **डॉ0 राजेश कुमार सिंह,** गॉधी विचार एवं शान्ति अध्ययन संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
5. **डॉ0 अखिलेश पाल,** सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी जी कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
6. **डॉ0 राजेश चन्द्र रंजन,** सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग, संत कोलम्बस कॉलेज, हजारी बाग, झारखण्ड।
7. **डॉ0 इमरान अहमद,** स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखण्ड।
8. **डॉ0 सन्नी कुमार मेहता,** शोधार्थी इतिहास विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखण्ड।
9. **डॉ0 संदीप कुमार मिश्रा,** स्नातकोत्तर इतिहास विभाग विनोबा भावे विश्वविद्यालय हजारीबाग, झारखण्ड।
10. **डॉ0 भानो खान,** राजनीति विज्ञान विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन।

SAMPLE

11. **मुकेश कुमार,** सीनियर प्रोड्यूसर, दूरदर्शन लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
12. **मुलायम सिंह यादव,** सुरजन यादव, शोधार्थी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराण्सी।
13. **डॉ0 सुनीता बघेल,** अतिथि प्रवक्ता, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
14. **डॉ0 रुचि त्रिपाठी,** सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान विभाग, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर।
15. **डॉ0 श्रद्धा गर्ग,** सहायक प्राध्यापक, लॉ विभाग, गुरू घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय, विलासपुर, छत्तीसगढ।
16. **अखिलेश त्रिपाठी,** सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी जी कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
17. **डॉ0 ओम प्रभा,** महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

नमूना • SAMPLE

अनुक्रमणिका

	भूमिका	*v*
	प्रस्तावना	*vii*
	लेखक मंडल	*xiii*
1.	गाँधी की ताकत कस्तूरबा *—डॉ. कन्हैया त्रिपाठी*	1
2.	महात्मा गांधी एवं लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण *—डॉ0 कमलेश पाल*	15
3.	गाँधी जी के प्रेरणा स्त्रोत *—डॉ0 इन्दु बघेल*	31
4.	महात्मा गाँधी एवं सत्याग्रह *—डॉ0 राजेश कुमार सिंह*	50
5.	महात्मा गाँधी एवं अहिंसा *—डॉ0 अखिलेश पाल*	62
6.	गाँधी जी एवं आदर्श राज्य, समाज एवं सर्वोदय *—डॉ0 राजेश चन्द्र रंजन*	76
7.	गाँधी जी का भारतीय राजनीति में प्रादुर्भाव *—डॉ0 इमरान अहमद*	96
8.	गाँधी एवं अहिंसा *—डॉ0 सन्नी कुमार मेहता*	118

SAMPLE

9. गाँधी के सत्याग्रह की आवधारण का एक विश्लेषण 132
—डॉ0 संदीप कुमार मिश्रा

10. महात्मा गाँधी के पर्यावरण पर विचार 144
—डॉ0 शानो खान

11. गाँधी जी की पत्रकारिताः एक विश्लेषण 154
—मुकेश कुमार

12. गाँधी जी का शिक्षा दर्शन 168
—मुलायम सिंह यादव, सुरजन यादव

13. सत्याग्रह का वर्तमान परिप्रेक्ष्य 209
—डॉ0 सुनीता बघेल

14. गाँधी का स्वराज्य चिंतन 216
—डॉ0 रुचि त्रिपाठी

15. गाँधी दर्शनः एक अध्ययन 228
—डॉ0 श्रद्धा गर्ग

16. गाँधी जी की दृष्टि में भारत के गांव एवं किसान 234
—डॉ0 अखिलेश त्रिपाठी

17. महात्मा गाँधी एवं असहयोग आन्दोलन 245
—डॉ0 ओम प्रभा

नमूना SAMPLE

1

गाँधी की ताकत कस्तूरबा

डॉ. कन्हैया त्रिपाठी

सारांश

गांधी जी के संपूर्ण जीवन का पाठ करते हुए यह प्रतीत होता है कि वह एक व्यक्ति के साथ–साथ भारत के एक ऐसे व्यक्तित्व भी थे जो न केवल भारत के लिए अपितु संपूर्ण मानवता के लिए वरदान हुए। उनका समस्त जीवन शांति, प्रेम, करुणा एवं अहिंसा का जीता–जागता उदाहरण है। निःसंदेह उनके इस बनने के क्रम में किसी न किसी का सहयोग हमेशा रहा है। इसमें गुरू, परिवेश, पुस्तकें और कस्तूरबा गांधी को मुख्यतः नाम लिया जा सकता है। कस्तूरबा जो उनकी अर्धांगिनी थीं, उनमें से एक थीं। कस्तूरबा गांधी का विवाहोपरान्त त्याग, शीलता एवं सौहार्द निःसंदेह गांधी जी के व्यापक जीवन संसार के लिए रीढ़ के समान रहा है। उन्होंने न केवल एक स्त्री संस्कृति के मिसाल को प्रस्तुत किया बल्कि गांधी जी को जीवन पर्यन्त अपने सहयोग से कभी वंचित नहीं होने दिया। गांधी जी ने एक बार कहा था–'अहिंसा सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। यदि हम इसका पूरा पालन नहीं कर सकते हैं तो हमें इसकी भावना को अवश्य समझना चाहिए और जहाँ तक संभव हो हिंसा से दूर रहकर मानवता का पालन करना चाहिए।' इस प्रपत्र में यह देखने की कोशिश की गई है कि गांधी की अहिंसा शक्ति के पीछे एक स्त्री का क्या योगदान रहा? कस्तूरबा ने अहिंसा के जरिए प्रेम और सत्य को कैसे वरण किया। तत्कालीन पितृसत्तात्मक व्यवस्था में कस्तूरबा और आज के स्त्री विमर्श के साथ कस्तूरबा को कैसे देखा जाय। गांधी को

SAMPLE

गांधी जैसा बनने में और उनकी अहिंसात्मक दृष्टि जिसमें छुआछूत से मुक्ति और प्रेम के निरूपण में कस्तूरबा शक्ति क्या थी? इसे इस पत्र में जानने–समझने की कोशिश की गई है।

की–वर्ड्सः कस्तूरबा, अहिंसा, पितशसत्ता, स्त्री विमर्श और गांधी

हमारी अनपढ़ दादी उस विशिष्ट मिट्टी की बनी थीं जिसने कभी पूछा ही नहीं कि अब मंजिल कितनी दूर है।[1] यह अनपढ़ दादी का किस्सा सुमित्रा कुलकर्णी ने अपनी पुस्तक अनमोल विरासत में उद्धृत किया है। सुमित्रा कुलकर्णी गांधी जी के पुत्र रामदास की सुपुत्री तथा कस्तूरबा और गांधी जी की पौत्री थीं। सुमित्रा कुलकर्णी के एक वाक्य से पता चल जाता है कि समर्पण की सशक्त मिसाल गांधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा के संपूर्ण जीवन का फलक किस अनुशासन से बंधा हुआ था। दरअसल, अनुशासन व्यक्ति के स्वयं पर और उसके संसर्ग में रहने वाले दूसरे लोगों पर अपना असर छोड़ता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जीवन को पढ़ते हुए यह आम धारणा बन जाना स्वाभाविक है कि वे अपने जीवन के उच्च नैतिक मूल्यों में अनुशासित एवं संयमित रहे। उनके बारे में यह भी कहा जा सकता है कि गांधी ने जिस आचरण की सभ्यता को प्रकट किया है उससे यह पता चलता है कि गांधी की अपनी आत्मशक्ति ही उनकी अपनी ताकत थी। लेकिन इन सबके बावजूद गांधी का सम्पूर्ण जीवन केवल गांधी द्वारा नहीं निर्मित हुआ अपितु उनके जीवन में उन तमाम लोगों का अप्रतिम योगदान है जो उनके किसी भी तरह संसर्ग में आए। इसमें गांधी जी की धर्मपत्नी कस्तूरबा जी का भी एक महत्वपूर्ण नाम है।

गांधी जी के बारे में यह कहा जाता है कि उनकी स्त्री समाज के प्रति चेतना बहुत सकारात्मक नहीं थी। ऐसी भी बातें आती हैं कि कस्तूरबा को खुद गांधी जी ने काफी कष्ट पहुँचाया। लेकिन स्त्री–पुरुष के दाम्पत्य जीवन में ऐसे उतार–चढ़ाव सम्भव हैं। वह चीजें हमें गांधी जी और माँ कस्तूरबा के भी जीवन में मिलता है। लेकिन गांधी जी के जीवन को ऊँचाई प्रदान करने में कस्तूरबा के अवदान की जब–जब व्याख्या की जाएगी तो वह कम ही होगी क्योंकि माँ कस्तूरबा को केवल उनके जीवन सहचरी के रूप में देखना ठीक नहीं है बल्कि गुलामी के दौर में एक स्त्री के आजाद आत्मनिर्णय को

भी मूल्याँकित किया जाना चाहिए। कस्तूरबा माँ को गांधी जी के साथ संसर्ग के अलावा कस्तूरबा माँ के कर्मयोग का भी मूल्याँकन होना चाहिए क्योंकि पत्नी धर्म का तो निर्वहन वह तो कर रही थीं लेकिन उस हालात में जब भारत में अशांति एवं संसय का माहौल था, उस समय वह जिन मनोयोग से किसी मिशन का स्वयं को हिस्सा बनाकर संघर्ष कर रही थीं, उसे नहीं भुलाया जाना चाहिए। वह चाहतीं तो गांधी जी की सिर्फ पत्नी भी बनकर जी सकती थीं लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया इसका मतलब है कि वह एक कर्मयोगिनी, त्याग की सहभागिनी एवं सबला होने में विश्वास करने वाली महिला थीं।

कस्तूरबा का अहिंसा जीवन

हम जानते हैं कि गांधी जी और कस्तूरबा का विवाह कम उम्र में हो गया था। दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ ही एक स्त्री के लिए उसके अहिंसा जीवन की परीक्षा होती है। उस जमाने में जब वह किशोरी थीं, कस्तूरबा के नए जीवन की शुरुआत के बारे में यदि विचार करें, तो यह कल्पना कर सकते हैं कि उनके लिए कितना चुनौतीपूर्ण समय रहा होगा। कस्तूरबा के बारे में गांधी जी ने बहुत ही कम विवेचन अपनी आत्मकथा–सत्य के साथ मेरे प्रयोग (**My Experiment with Truth**) में किया है। उसका केवल इतना सा जिक्र है कि पिता जी की रुग्णावस्था व लगभग मरणासन्न अवस्था में भी मैं कस्तूरबा के साथ अपने दाम्पत्य को समझ रहा था। दसरी एक और छोटी सी चर्चा है कस्तूरबा के बारे में वह थी गांधी के विदेश में शिक्षा लेने हेतु आए धनाभाव के बारे में। उन्होंने कहा–***इसे (गहने) बेच कर आप पढ़ने चले जाओ।*** पत्नी कस्तूरबा के इस वाक्य ने मोहन की निराशा को मिटा दिया और वे विदेश चले गए। कस्तूरबा ने यदि अपने गहनों का पिटारा पति मोहन को नहीं दिया होता, तो शायद मोहनदास करमचंद गांधी यानी महात्मा गांधी बैरिस्टर नहीं बन पाते।यदि इन दोनों उद्धरणों को देखा जाए तो यह लगता है कि गांधी ने अपनी आत्मकथा में अपनी पत्नी के बारे में इतनी कम जगह जो दी वह बेमानी थी। वे और भी बहुत से चीजों से दो चार हुए होंगे जो बहुत महत्त्वपूर्ण भी रहे होंगे, उसका वर्णन उन्होंने नहीं किया इससे उनके पितृसत्तात्मक दिमाग की बात भी हम कर सकते हैं।

खैर, सरदार बल्लभभाई पटेल अपने समय के यशस्वी विचारक एवं राष्ट्र सेवक माने जाते हैं। कस्तूरबा को उन्होंने बहुत ही करीब से देखा था।

वह कई बार कई आन्दोलनों में कस्तूरबा के करश्माई और जुझारू व्यक्तित्व से परिचित हुए थे। सरदार बल्लभभाई पटेल के ही अनुभव व अभिव्यक्ति को गुरदयाल मलिक ने अपनी पुस्तक 'बा अणि बापू' में लिखा है कि एक बार 1932 में जब बारडोली सत्याग्रह की शुरुआत हुई थी–Vallabhbhai remarked, "Truly, Ba is an image of non-violence. I have not seen any other woman like her. She is so humble, natural and easy in her ways, that one is simply amazed at Government's treating her so severely."..... Bapu re-joined, "That is but true. But personally I consider Ba's courage to be her greatest attribute. And she has shown it steadfastly from the days of the South African struggle till this day, even though at times like all human beings she is angry and envious."[2]

आखिर उन्होंने कुछ तो देखा होगा तब वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे होंगे कि **बा** अहिंसा की प्रतिमूर्ति थीं। इसी प्रकार सुभाष चाँद बोस ने २२ फरवरी , १९४४ को श्रीमती कस्तूरबा गांधी के निधन पर जो बातें रखी थीं उसे पढ़कर यह महसूस होता है कि स्त्री समाज की कितनी बड़ी आयकॉन कस्तूरबा थीं। सुभाष बाबू पर केन्द्रित **'नेताजी संपूर्ण वांग्मय'** या **टेस्टामेंट ऑफ सुभाष** बोस को पढ़ें, उसमें यह स्पष्ट लिखा है– वह (कस्तूरबा) भारतीय स्त्रीत्व का आदर्श थीं। शक्तिशाली, धैर्यवान, शांत और आत्मनिर्भर। कस्तूरबा हिन्दुस्तान की उन लाखों बेटियों के लिए एक प्रेरणास्रोत थीं जिनके साथ वे रहती थीं और जिनसे वे अपनी मातृभूमि के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान मिली थीं।.... महात्मा गांधी ने जब भी सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया, उस संघर्ष में कस्तूरबा पहली पंक्ति में उनके साथ खड़ी थीं। हिन्दुस्तान की बेटियों के लिए एक चमकते हुए उदाहरण के रूप में और हिन्दुस्तान के बेटों के लिए एक चुनौती के रूप में कि वे भी हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में अपनी बहनों से पीछे नहीं रहें।[3]

गांधी का कबूलनामा

कस्तूरबाई का जीवन साथी तो एक पितृसत्तात्मक समाज का बालक था। बी आर नंदा ने तो गांधी को लिबरल किन्तु रेडिकल गांधी के रूप में देखा है।[4] गांधी ने भी अपने भीतर के गांधी को काफी तरीके से इसका भी कई बार वर्णन अपने आत्मकथा में किया। लेकिन इन सभी आख्यानों का

वर्णन करते हुए यह गांधी कभी नहीं भूलते कि वह भी एक पुरुष हैं। लेकिन सच को स्वीकार करने का साहस भी सामान्य साहस नहीं होता। जैसा कि प्रत्येक पति अपनी पत्नी के बारे में कुछ तारीफें करता है। वैसे ही गांधी की यह स्वीकारोक्ति कि स्वभाव से सीधी, स्वतंत्र, मेहनती और मेरे साथ तो कम बोलनेवाली थी, कस्तूरबाई के बारे में वह कहते हैं। जबकि अपने बारे में वह कहते हैं कि मैं अपनी स्त्री के प्रति विषयाक्ति था।

गांधी जी की यह 'विषयाक्ति' जो पितृसत्ताक समाज अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए रखता है का एक उदाहरण है। प्रायः उपभोग की वस्तु के रूप में एक स्त्री को देखने वाला पुरुष प्रधान समाज को गांधी ने स्वीकार किया है लेकिन यह अच्छाई भी है कि गांधी ने उन चीजों को भी बहुत खूबसूरती से रखा है जो गांधी ने जरूरी मानते हुए कस्तूरबाई के लिए न कर पाने का मलाल रखते हैं। गांधी जी के साथ कस्तूरबाई का इसे प्रेम कहा जाए या गांधी के आत्म की आवाज, इसे समझने की जरूरत है। यथा गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है–

- जवानी में पढ़ाने के जितने प्रयत्न मैंने किए, वे सब लगभग निष्फल हुए। जब मैं विषय की नींद से जागा, तब तो सार्वजनिक जीवन में कूद चुका था। इसलिए अधिक समय देने की मेरी स्थिति नहीं रही थी। शिक्षकों के द्वारा पढ़ाने के मेरे प्रयत्न भी व्यर्थ सिद्ध हुए। यही कारण है कि आज कस्तूरबाई की स्थिति मुश्किल से पत्र लिख सकने और साधारण गुजराती समझ सकने की है। मैं मानता हूँ कि अगर मेरा प्रेम विषय से दूषित न होता तो आज वह विदुषी स्त्री होती।
- पत्नी को अधिक समय न दे पाने का दुःख
- सामाजिक रीति–रिवाजों से कस्तूरबाई को मुक्त न कर पाने की छटपटाहट

गांधी जी ने कस्तूरबाई के जीवन को अपनी सफलता–असफलता के रूप में देखी, यह भी कस्तूरबाई के सकारात्मक सांसारिक जीवन के मिसाल के रूप में देखा जा सकता है। वे इसीलिए यह भी लिखते हैं कि कस्तूरबाई ने जो स्वतंत्रता बरती, उसे मैं निर्दोष मानता हूँ। जिस बालिका के मन में पाप नहीं है, वह देव–दर्शन के लिए जाने पर या किसी से मिलने जाने पर दबाव क्यों सहन करें? अगर मैं उस पर दबाव डालता हूँ, तो वह मुझ पर क्यों न

डाले?..... यह तो अब मुझे समझ में आ रहा है। उस समय तो मुझे अपना पतित्व सिद्ध करना था। लेकिन पाठक यह न मानें कि हमारे गृहजीवन में कहीं भी मिठास नहीं थी। मेरी वक्रता की जड़ प्रेम में थी। मैं अपनी पत्नी को आदर्श पत्नी बनाना चाहता था।

कस्तूरबाई का सांस्कृतिक जीवन

मनुष्य का जीवन वस्तुतः सांस्कृतिक ही होता है। वह अपने अस्तित्व के साथ संस्कृति को रचता, बुनता और सवंर्धित करता है। इसलिए कस्तूरबाई के जीवन को मैं एक सांस्कृतिक महिला सख्शियत के रूप में मैं देखता हूँ। वह न केवल एक पत्नी थीं बल्कि गांधी का तो परिवार बहुत बड़ा था इसलिए सामाजिक ताने–बाने का जो तमाम रिश्ता होता है वह सब मिला था कस्तूरबाई को। वह पत्नी के साथ किसी की बेटी, बहू, ननद, माँ और दादी माँ थीं। लेकिन कस्तूरबाई के बारे में यह बिल्कुल सच है कि वह केवल इन्हीं रिश्ते के रूप में नहीं थीं। बल्कि सुभाष बाबू ने तो उन्हें 'भारतीय जन की माँ' कहा था। संपूर्ण भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहे जाते हैं लेकिन यह कम लोग जानते हैं कि 22 फरवरी को जब कस्तूरबा ने अपनी अंतिम सांस ली थी, उस रोज सुभाष बाबू ने अपने एक रेडियो संबोधन में कस्तूरबा को **'भारतीय जनता की माँ'** कहा था। यह उपाधि जिस महान नायक ने उन्हें दी, उससे इसकी गंभीरता को समझा जा सकता है। भारत की महान महिला स्वतंत्रता सेनानी कस्तूरबा का वास्तव में महान गौरवमयी इतिहास है। बापू के साथ बा का वैयक्तिक जीवन चाहे जो उभरकर सामने आया हो लेकिन उनका सार्वजनिक जीवन कोई मामूली नहीं रहा।

गांधी जी ने खुद उनकी विनम्र सादगी पसंद जीवन की तारीफ की है। स्वयं महात्मा गाँधी ने यह स्वीकार करते हुए कहा था, "जो लोग मेरे और बा के निकट संपर्क में आए हैं, उनमें अधिक संख्या तो ऐसे लोगों की है, जो मेरी अपेक्षा बा पर कई गुना अधिक श्रद्धा रखते हैं।'' एक विनम्र माँ के स्वभाव से आकर्षण ही यह था जो सभी लोग अपनी बात कस्तूरबा के समक्ष रखने जाया करते थे। इतिहास के कई ऐसे मौके आज भी कस्तूरबाई के संघर्ष की अविरल गाथा गाते हैं। यथा–सन 1922 में गाँधी के गिरफ्तारी के पश्चात् उन्होंने वीरांगनाओं जैसा वक्तव्य दिया और इस गिरफ्तारी के विरोध में विदेशी कपड़ों के परित्याग का आह्वान किया, उसे इतिहास कभी नहीं भुला

सकता। उन्होंने गांधीजी का संदेश प्रसारित करने के लिए गुजरात के गाँवों का दौरा भी किया। 1930 में दांडी और धरासणा के बाद जब बापू जेल चले गए तब बा ने उनका स्थान लिया और लोगों का मनोबल बढाती रहीं। क्रन्तिकारी गतिविधियों के कारण 1932 और 1933 में उनका अधिकांश समय जेल में ही बीता। सन 1939 में उन्होंने राजकोट रियासत के राजा के विरोध में भी सत्याग्रह में भाग लिया।

सुमित्रा कुलकर्णी ने अपनी पुस्तक में ऐसे ही कार्यों का बहुत बखूबी वर्णन कस्तूरबा के संबंध में किया है। उनके इस उद्धरण से यह साफ पता चलता है कि उन्हें केवल स्वतंत्रता सेनानी कह देना उचित नहीं बल्कि उन्हें उस रूप में भी याद किया जाना चाहिए जो एक ग्रासरूट वर्कर अपने जीवन–साधना में करता है। सुमित्रा कुलकर्णी के ही शब्दों में–एक बार गांधी जी कस्तूरबा के साथ मितीहरवा गांव के पास छोटी सी बस्ती में गए। वहाँ की कुछ एक महिलाएं एकदम ही गन्दी–घिनौनी दीख रही थीं। गांधी जी ने दादी से कहा–इन औरतों से कहो कि कुछ सफाई से रहो। कपड़े धो लिया करें।' वे औरतें कस्तूरबा को अपने झोपड़े में ले गईं और अन्दर की हालत बताकर कहने लगीं–देखिए, यहाँ कोई आलमारी या आला (ताक) नहीं जहाँ हमने कोई कपड़े रखे हों। एकमात्र साड़ी हमारे बदन पर है। महात्मा जी से कहिए कि वे हमें दूसरी साड़ी दिलवा दें। हम वादा करते हैं कि कभी गन्दे नहीं रहेंगे।'

एक दूसरे गाँव में दो औरतें झोंपड़ी से निकल ही नहीं रही थीं। क्या मामला था, यह पता लगाने के लिए कस्तूरबा झोंपड़ी में चली गईं। अन्दर दो स्त्रियाँ लगभग नग्न हालत में बैठी थीं। उनके पास तन ढकने को कपड़ा तक नहीं था कि वे बाहर सड़क तक निकल सकतीं। घर का कामकाज भी रात के अँधियारे में कर लेती थीं ताकि उनके शरीर की लाज बची रहे। यह थी गरीबी की पराकाष्ठा। मगर इस बेहाली में भी सभ्यता, सौहार्द जीवन्त था। जरा सी सहानुभूति पाते ही इन दरिद्रों का प्यार, आदर, श्रद्धा–भक्ति पनप उठते थे। दादी और देवदास काका ने इस प्रकार छः महीने चम्पारण के एकदम पिछड़े और गरीब ईलाके में काम किया।[5]..... सुमित्रा आगे लिखती हैं कि पहली बार 1917 में देश में ग्रामसेवा की नींव पड़ी और वही पहला मौका था जब पहली बार महिलाओं ने अपना संकोच छोड़कर समाज–सेवा में आगे बढ़कर हिस्सा लिया। स्त्री शक्ति और स्त्री स्वातंत्र्य का

प्रादुर्भाव 1917 से भारत में हो गया था। पश्चिम के देशों में अभी इस दिशा में सोचना भी शुरू नहीं हुआ था।[6]

कस्तूरबा गांधी इस प्रकार उन महिलाओं की प्रथम हस्ताक्षर भी दीखती हैं जिसमें भारत निर्मात्री स्त्रियों का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। गांधी जी के ही इतने बड़े औरे को हम चाहे जिस रूप में देखें लेकिन यदि अरुण गांधी की मानी जाय तो उन्होंने अपनी पुस्तक 'कस्तूरबाः अ लाइफ' में लिखा है–'द स्टोरी ऑफ माई ग्रैण्डमदर्स लाइफ इस सिम्पलीः ह्वाइल मोहनदास एक्सपेरीमेण्टेड विद् ट्रुथ, कस्तूरबा एक्सपेरिएन्स्ड इट।'[7] इसी प्रकार गुरदयाल मलिक ने अपनी पुस्तक 'बा अणि बापू' में लिखते हैं–**Bapu fashioned this new edition of Sannyasa in the course of his search for a way of life based on truth and non-violence, and valuable for our age. And Ba played the role of a real helpmate to him in this arduous task. In the passages collected here we see Ba and Bapu engaged in this search and helping each other in the process.**[8] यद्यपि ऐसे भी प्रसंग मिलते हैं कि कई दफा गांधी ने कस्तूरबा को सत्याग्रह संघर्ष के खातिर संतोष कर लिया। जब वह अपने उत्तरदायित्वों में लीन रहे तो उन्होंने कस्तूरबा को एक ऐसा भी पत्र लिखा मानों वह उनके लिए अपने सांसारिक सत्याग्रह संघर्ष–सेवा के सामने कोई मायने ही नहीं रखती हों। फॉक्सरस्ट जेल का वह पत्र यहाँ उसका एक उदाहरण है जो गांधी जी ने 09 नवम्बर 1908 को लिखा था–

प्यारी कस्तूर,

तुम्हारी तबियत के बारे में आज ही श्री वेस्ट का पत्र मिलाा। मेरा ह्रदय फटा जा रहा है, मैं रो रहा हूँ। लेकिन तुम्हारी शुश्रुषा करने आऊँ, ऐसी स्थिति नहीं है। सत्याग्रह संघर्ष को मैंने अपना सब कुछ अर्पित कर दिया है। इसलिए मुझसे आना हो ही नहीं सकता। जुर्माना दूँ तभी आ सकता हूँ, और जुर्माना मुझसे दिया नहीं जाएगा। तुम जरा हिम्मत रखो और नियम पूर्वक खाओ–पिओ, तो अच्छी हो जाओगी। फिर भी मेरी बदनसीबी से कहीं ऐसा हो कि तुम चल बसो तो मैं इतना ही कहूँगा कि मेरे जीते जी तुम मेरे वियोग में भी मर जाओ तो इसमें कुछ बुरा नहीं है। तुम पर मेरा इतना स्नेह हे कि तुम मर कर भी मेरे मन में जीवित रहोगी। तुम्हारी आत्मा तो अमर है। मैं तुमसे